(*) विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग के दोष Demerits of University education Commission)

(i) उद्देश्यों की व्यापकता → (PREVALENCE of objective

आयोग ने उच्च शिक्षा के उद्देश्यों के अन्तर्गत शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा आध्यात्मिक इत्यादि सभी प्रकार के विकास की बात कही किन्तु इन उद्देश्यों की प्राप्ति का प्रयास माध्यमिक स्तर से ही होना चाहिए, न की विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय स्तर पर।

(2) धर्म शिक्षा की अनिवार्यता → Necessity of Religious education

धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा महत्वपूर्ण होती है, परन्तु उच्च शिक्षा में इसे अनिवार्य बनाना कहीं न कहीं धार्मिक कट्टरता की ओर बढ़ावा देना है।

(3) माध्यम की अस्पष्टता :- UNCLEARITY of medium

→ आयोग ने उक्त भाषा के शिक्षा के बारे में कोई नहीं कहा, क्षेत्रीय भाषा की लिपि वर्षों तक हिन्दी अंग्रेजी भाषा में शिक्षा देने का तर्क किसी भी तरह से सही नहीं थी।

NOTES

(4) वेतनमान → Pay scale (आयोग ने विश्वविद्यालय के → शिक्षक के पद श्रेणी में बांटा किन्तु वेतन की भिन्नता अलग होना चाहिए, इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा।

(5) स्त्री शिक्षा (women education) → आयोग ने स्त्री शिक्षा को संकुचित लेकर किया महिलाओं को गृह आदि रखनी में बांधकर उनकी शिक्षा को सीमित कर दिया. अतः लोकतान्त्रिक देश में महिला - पुरुष को बराबर शिक्षा मिलना चाहिए।

(6) ग्रामीण शिक्षा (Rural education)

→ माध्यमिक स्तर पर भी बच्चे नहीं पहुंच पाते और महाविद्यालय और विश्वविद्यालय खोलना धन और समय की बर्बादी है।

विश्वविद्यालय 300, महाविद्यालय 500

(7) teaching staff (शिक्षक वर्ग)

→ Non teaching staff के बारे में कुछ नहीं बोला. उनकी salary?

Conclusion निष्कर्ष

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग के अध्यक्ष डा० सर्वेपल्ली राधाकृष्णन उच्च कोटी के विद्वान, दार्शनिक तथा शिक्षाविद् थे। आयोग के सिफारिशों को गम्भीरता पूर्वक विचार करने से हमें दूरगामी लक्ष्यों की प्राप्ति संभव लगती है, न कि तत्कालिक। इतना अवश्य है कि आयोग के सुझावों में से कुछ को क्रियान्वित करना और कुछ सिफारिशों को धरातल में उतारने से देरी करने के चलते उतने प्रभावी नहीं हो सके, लेकिन इन सिफारिशों को विचार करने के बाद भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेन्द्र प्रसाद ने देश वासियों को कहा "आयोग ने हमारी विश्वविद्यालय शिक्षा पर गम्भीरता पूर्वक मनन करके प्रतिवेदन प्रस्तुत किए हैं, और साथ ही अमूल्य सुझाव दिए हैं भावी पीढ़ी के लिए